आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/ अंक 4/दिसंबर 2024
Received: 21/11/2024; Published: 30/12/2024

कहानी

"बूढ़ी अम्मा"

- **डॉ.सपना दलवी**
हिंदी लैक्चरर
के ई बोर्ड पी.यू.कॉलेज
धारवाड़ कर्नाटक

डॉ.सपना दलवी, **"बूढ़ी अम्मा"** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/ अंक 4/दिसंबर 2024, (322-324)

उस मोड पर अगर अम्मा नजर नहीं आती तो मेरा मन उदास हो जाता। यह किस्सा है 2002 का जब मैं बीए प्रथम वर्ष में पढ़ती थी।कॉलेज जाने के रास्ते पर वह बूढ़ी अम्मा रोज भीख मांगने खड़ी रहती थी ।पर उसे पैसे देने से हर कोई पीछे हट जाता था।शुरू शुरू में मुझे भी लगा नहीं देनी चाहिए,अच्छी खासी दिखने वाली यह अम्मा आखिर भीख क्यों मांगती है..?यह सवाल मेरे दिमाग में हमेशा आता,जब_जब मैं बूढ़ी अम्मा को देखती।पर मेरी जो सहेलियां थी वह,उसे बुढ़िया कहकर चिढ़ाती थी और वह बुढ़ि अम्मा भी कम नहीं थी,वह भी भीख मांगती और भीख ना मिलने पर सबको गाली देने लग जाती थी।इसलिए हर कोई उसे पैसा न देकर नजर अंदाज करके आगे निकल जाता था।

पर बूढ़ी अम्मा के प्रति मेरे मन में पता नहीं कैसे स्नेह की भावना जागृत हुई।मैं अम्मा को रोज कभी एक तो कभी दो रुपए देने लगी।उसके बदले में अम्मा से मुझे ढेर सारी दुआएं मिलने लगी।क्योंकि मेरे संस्कार यही बताते हैं कि हमेशा बड़ों की इज्जत करो।चाहे वह अमीर हो या गरीब।आगे यह सिलसिला यूं ही जारी रहा।रोज उस रास्ते पर बूढ़ी अम्मा का भीख मांगना और मेरा अम्मा को कभी एक कभी दो रुपए देना।उस वक्त मेरे लिए एक दो रुपए कम थोड़ी ना थे पैसे रोज कहां से देती।फिर मैंने सोचा अम्मा को अपना टिफिन दिया करूंगी।जिससे अम्मा की भूख मिट सकेगी।पर अम्मा की मजाल जो टिफिन या कुछ खाने की चीज मुझसे ले ले।उसे तो बस पैसे चाहिए थे।इस पर मेरी सहेलियां मुझसे कहती उस बुढ़िया के चक्कर में मत पड़।वह तुम्हें इमोशनल ब्लैकमेल करके लूट रही है।पर उनकी इस बात पर मेरा जवाब यही रहता वह क्या मुझे लूटेगी।मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है।मेरे पापा हिटलर से थोड़ी ना कम थे।कहां मिलती पॉकेट मनी।अगर कभी

जरूरत पर दे भी देते तो हिसाब लेते थे।पर उस अम्मा के लिए मुझे कोई ना कोई जुगाड़ करना था,जिससे मुझे कुछ पॉकेट मनी मिल सके और वह पैसे में अम्मा को दे सकूं।ऐसे तैसे करके रोज दस रुपए पापा से मिलने लगे।फिर क्या था दस रुपए में से रोज पांच रुपए बूढ़ी अम्मा की झोली में जाते और बदले में अम्मा मुझे दुआएं देती।

यह सिलसिला यूं ही चलता रहा।अम्मा की झोली पैसों से और मेरी झोली दुआओं से भरने लगी।फिर एक दिन बूढ़ी अम्मा को पैसे देकर मैं उसके साथ बातें करने में व्यस्त हो गई,हंसी मजाक चलने लगा।अम्मा के चेहरे पर मुस्कान देख कर मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था।भले ही उस वक्त इतनी समझ नहीं थी,पर हमारे कारण किसी के चेहरे पर मुस्कान खिले यह तो कितनी सुंदर बात थी।पर आज यह घटना याद आती है तो मैं पूरी तरह सहम जाती हूं,कैसी थी अम्मा की कहानी..?जिसे मैं अब बेहतर तरीके से समझ पाई हूं खैर अम्मा और मैं गप्पे लड़ा ही रहे थे कि मेरी सहेलियां आ गई और मुझे एक किनारे ले जाकर अम्मा की तरफ़ नजर गढ़ाए, मुझे समझाने लगी।अरे!यार तू क्या पागल है जो इस बुढ़िया के चक्कर में पड़ रही है रोज पैसे देती हो,यह कोई गरीब लाचार नहीं है बल्कि इसका भी परिवार है।बेटा बहू पोते सब है। जब बेटे बहु ने इसे छोड़ रखा है तो,तू क्यों इसके लिए इतना सोच रही है। सहेलियों की बातें सुनकर अम्मा के प्रति और अधिक स्नेह मेरे मन में उभरा।इस बात पर मुझे अम्मा पर गुस्सा नहीं आया।क्योंकि इस बात से मेरे मन में और एक सवाल ने घर कर लिया।अगर अम्मा का परिवार है तो उसके बेटे ने अम्मा को इस तरह रास्ते पर क्यों छोड़ रखा है..?

एक दिन मैंने सोच लिया कि मैं अम्मा से इस बारे में बात करूंगी और फिर दूसरे दिन कॉलेज जाते वक्त जब वह अम्मा मुझे मिली, तब मैंने अम्मा से पूछा,अम्मा जब तुम्हारा बेटा है,बहू है,पोता पोती है, तो फिर तुम भीख क्यों मांगती हो..? तुम अपने परिवार के साथ क्यों नहीं रहती हो...?तुम्हारे बेटे ने तुम्हें क्यों सड़क पर छोड़ रखा है...?मेरे सवाल बढ़ते जा रहे थे की अम्मा ने मुझे बीच में ही टोकते हुए बोला,मेरे बेटे की कमाई इतनी नहीं कि वह सारे परिवार का पेट भर सके।मैं अपने बेटे पर बोझ नहीं बनना चाहती हूं।मैं तो बस उसकी थोड़ी मदद करना चाहती हूं।ताकि मेरे बेटे का बोझ थोड़ा हल्का हो सके।अम्मा की बातों से मुझे उसके बेटे पर गुस्सा आया,मैं बोली अम्मा से,ऐसा कैसा है बेटा तुम्हारा,अपनी पत्नी और बच्चों को देख रहा है,तो अपनी बुढ़ि मां को देखना कौन सी बड़ी बात है।पर मेरी बात से अम्मा पर कोई असर नहीं पड़ा।वह सिर्फ अपने बेटे के लिए ही सोच रही थी।क्या मां ऐसी होती है जो अपने बच्चों के लिए सब कुछ सह लेती है।आगे कुछ बोलना मेरी समझ से दूर था।खैर अम्मा से बातें करते-करते मेरी नजर अम्मा की झोली पर पड़ी।जो पैसे भीख में मिले थे,सारे के सारे झोली में भरे पड़े थे।यह देखकर मैंने अम्मा से बोला यह पैसे जमा करके क्यों रखे हैं।इस पर अम्मा जो बोली वह सुनकर तो मुझे अजीब लगा।अम्मा बोली इन पैसों से वह अपने बेटे की मदद करेगी।

अजीब है जिस बेटे ने दर-दर की ठोकर खाने के लिए अम्मा को सड़क पर छोड़ दिया है,उस बेटे के लिए मां की ममता बहती जा रही थी।उस वक्त इतना नहीं समझ पाई पर आज समझ आता है की माता-पिता अपने बच्चों के लिए आखरी सांस तक सब कुछ करते रहते हैं।भले ही बच्चे कैसे भी हो और कितने भी बड़े क्यों ना

हो।अम्मा तो ममता के सागर में डूबी हुई थी,उसे समझाना नामुमकिन हो गया था।इसलिए मैंने अम्मा से कहा, अम्मा तुम कुछ अच्छा खाना खा सको इसलिए मैं तुम्हें पैसे देती थी,ताकि तुम्हें कोई तकलीफ ना हो।पर कल से मैं तुम्हें पैसे नहीं दूंगी। इतना कहकर मैं वहां से चली गई।

अगले दिन मैं कॉलेज जा रही थी तो मेरी नजर उस मोड पर गई।पर आज अम्मा वहां नहीं थी।ऐसे ही दो दिन बीत गए।पर अम्मा नजर नहीं आई।मैं भीतर ही भीतर रोने लगी,मुझे अम्मा की याद आ रही थी और साथ ही अपने पर गुस्सा भी।जो पैसे रोज अम्मा को देती थी, वह पैसे मैं जमा करने लगी।इस उम्मीद पर कि जब अम्मा मिलेगी तब मैं उन पैसों को अम्मा की झोली में डाल दूंगी।पर मैंने उस दिन अम्मा से गुस्से में बात की,यही सोच सोच कर मेरा मन उदास होने लगा।मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करने लगी कि,एक बार बस अम्मा से मिला दो।शायद भगवान ने मेरी सुन ली,कुछ दिनों बाद अम्मा मुझे मिली पर भीख मांगने के लिए नहीं बल्कि मुझे आज आशिर्वाद देने के लिए।क्योंकि मेरे दिए पैसों से अम्मा को मदद जो मिली।यह उस गरीब मां के लिए बहुत बड़ी बात थी। जमा किए सारे पैसे मैने अम्मा की झोली में डाले और अम्मा ने ढेर सारी दुआओं से मेरी झोली भर दी।अम्मा का और मेरा यह साथ यूंही मजबूत होता गया।

फिर कुछ दिनों बाद अम्मा का आना बंद हो गया।दिन बीते जा रहे थे पर अम्मा की खबर नहीं,फिर एक दिन अचानक पता चला सड़क किनारे बूढ़ी अम्मा की लाश मिली है। बगल में पैसों से भरी पोटली।अम्मा के अंतिम संस्कार के लिए उसका बेटा लाश ले जाने के लिए कम पैसों की पोटली पर अपना अधिकार जमाने पहुंच गया था।पर अम्मा का अंतिम संस्कार बेटे के हाथों से होगा यह अच्छी बात थी क्योंकि अम्मा भी यही चाहती थी,क्योंकि बेटे के लिए इतना प्यार जो था।तभी तो भीख मांग कर पैसे जोड़ रखे थे अम्मा ने। सच में जो मां कर सकती है अपने बच्चों के लिए वह कोई और नहीं कर सकता।तभी तो ईश्वर से पहले मां होती है पर बुढ़ि अम्मा की कहानी खत्म नहीं हुई है।बल्कि यह तो अब शुरुआत है।ना जाने कितनी अम्मा होगी जो सड़क किनारे रह रही होगी, जो अनाथ आश्रम में अपना बुढ़ापा काट रही होगी।तभी तो आज वृद्धाश्रमों में वृद्धों की संख्या बढ़ रही है।क्या तब भी और आज भी माता-पिता बच्चों पर बोझ बन जाते हैं।बूढ़े होने पर क्यों नहीं हम माता-पिता की बच्चों की तरह देखभाल करते..?आज स्थिति ऐसी हो गई है पहले घर के बुजुर्ग अच्छी-अच्छी कहानी सुनाते थे,जिन्हें सुनकर हम चैन की नींद लेते थे।तो क्या अब हमारा फर्ज नहीं की,हम उनके लिए कुछ करे,थोड़ा समय निकाले और उनसे बात करे, उनके बुढ़ापे का सहारा बनकर, उन्हें थोड़ी सी खुशियां दे सके।

****